Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2021 2(2), 435–439

THE DOMINANCE OF THE ELEMENT OF LOVE IN THE POETRY OF NAVENDU MAHARSHI

नवेन्दु महर्षि के काव्य में प्रेम-तत्व की प्रधानता

Ajay Kumar[1], Shekhar Shankar Mishra[2], Kalyan Kumar Jha[3], Sushant Kumar[4], Sakshee Shalini[5]

[1] Research Student, University Department of Hindi, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur, India
[2] Head, Department of Hindi, M.P. Sinha Science College, Muzaffarpur, India
[3] Professor, University Department of Hindi, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur, India
[4] Assistant Professor, University Department of Hindi, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur, India
[5] Assistant Professor, Dharma Samaj Sanskrit College, Muzaffarpur, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v2.i2.2021.5488

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2021 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: Love has been the life element of Indian literature. Many epics and important works have been written with love as the central element. But among the writers who established the element of love in Dalit literature, the name of Navendu Maharshi is prominently taken. In fact, Dalit literature moves forward giving centrality to the reality experienced and its own experience. In such a situation, love gets very little space in Dalit literature. But Navendu Maharshi's poems give centrality to love and the establishment of love in human life has been the main objective of his poems. Through this research paper, an attempt has been made to underline the prominence of the element of love in Navendu Maharshi's poetry and to reveal its speciality.

Hindi: भारतीय साहित्य का प्राण-तत्व प्रेम रहा है। प्रेम को केन्द्रीय तत्व मानकर अनेक महाकाव्य एवं महत्वपूर्ण रचनाएँ हुई हैं। परंतु दलित साहित्य में प्रेम-तत्व को स्थापित करने वाले रचनाकारों में से एक नवेन्दु महर्षि का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। वस्तुतः दलित साहित्य भोगे हुए यथार्थ एवं अपनी अनुभूति को केन्द्रीयता प्रदान करते हुए आगे बढ़ता है। वैसी स्थिति में प्रेम को दलित साहित्य में कम ही स्थान मिल पाता है। लेकिन नवेन्दु महर्षि की कविताएँ प्रेम को केन्द्रीयता प्रदान करती हैं तथा मानवीय जीवन में प्रेम की स्थापना ही उनकी कविताओं का मुख्य उद्देश्य रहा है। इस शोध-पत्र के माध्यम से नवेन्दु महर्षि के काव्य में प्रेम-तत्व की प्रधानता को रेखांकित करने एवं उसके वैशिष्ट्य को उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है।

Keywords: Chhatpatahat, Astivik, Chhayavaad, Rasasiddha, Madhurya, Prem-Jalada-Mala, Shunya Hridya, छटपटाहट, आस्तिविक, छायावाद, रससिद्ध, माधुर्य, प्रेम-जलद-माला, शून्य हृदय

1. प्रस्तावना

प्रणय, प्रेम या श्रृंगार की चरम परिणति आनंद है। प्रेम के बारे में ओशों कहते हैं। मनुष्य का मनुष्य से प्रेम और समर्पण क्षणिक है, जबकि यही प्रेम ईश्वर से होने पर स्थायी बन जाता है। ओशों के शब्दों में ''जब भी प्रेम जगता है तो भय पैदा होता है, घबड़ाहट पैदा होती है" क्योंकि प्रेम का एक ही अर्थ होता है, अहंकार का समर्पण करना। जहाँ भी प्रेम पैदा होता है, वहाँ अहंकार विसर्जन करना होता है और वहीं भय पकड़ता है। हम अहंकार को पकड़ते है चाहे प्रेम मरे तो मर जाए। प्रेम को पकड़ों, अहंकार को मरने दो। अहंकार तो सिर्फ शिक्षा पात्र है, टूटी-फूटी सम्पदा है। प्रेम समाधि है प्रेम सबकुछ है। प्रेम की ही नौका तुम्हें उस पार ले जा सकती है।

'जा दिन संत सताइया, ता छिन उलटि खल्क्क।
छत्र खसै, धरती धसै, तीनेउ लोक गरक्क।।'

2. मुख्य भाग

जिनके जीवन में प्रेम पूरा जग गया है उन्हें संसार सताने को आतुर हो जाता है, ऐसे ही नहीं जीसस को सूली पर लटकाया गया। तुम्हारे जैसे उनके तर्क थे, तुम्हारे जैसा ही लोभ था, तुम्हारे जैसा ही भय था, तुम्हारे जैसा ही इर्ष्या थी, तुम्हारे जैसा ही अहंकार था जिन्होंने सुकरात को जहर पिलाया, तुम्हारे जैसे लोग थे। जब प्रेम का बीज पूरा खिलता है तो लोग ऐसे अभागे हैं कि बजाय उसकी छाया में बैठने के, उसे काटने चल पड़ते हैं। कुल्हाड़ियों को लेते हैं। लोग ऐसे विक्षिप्त और अंधे हैं कि बजाय उस प्रेम के पौधे का लाभ ले, सत्संग के, उस पौधे को नष्ट करने लग जाते हैं, रौंद देते हैं गुलाबों को।''[1]

प्लेटो द्वारा 'प्रेम' की जन्मगाथा का जिक्र किया गया था। यहाँ हम कविता की जन्मगाथा का स्मरण कर सकते है; जिसके अनुसार कविता का जन्म महर्षि वाल्मीकि के मानस में उस क्रांची के शोक रूपी बीज से होता है, जिसके प्रेमी की उनके रति कर्म के दौरान, एक बहेलिये ने हत्या कर दी थी। क्रौंच की यह मृत्यु एक अर्थ में प्रेम (श्रृंगार) की मृत्यु है। जो शोक (करुणा) के रूप में परिणत होकर कविता में फलित होती है।

यूँ कविता का जन्म प्रेम की मृत्यु के गर्भ से होता है। इस अर्थ में कविता मात्र अपने रूप में अपनी जन्मजात कारगता में शोकमूलक है। लेकिन शोक का यह भाव प्रेम के अभाव से, उसके विलोपन से, अभिन्न संबंध रखता है, वह प्रेम के अभाव का एक प्रतिलोभ चिन्ह है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि कविता मात्र अपने मूलरूप में, अपने डी.एन.ए. में प्रेम के अभाव को एक प्रतिलोम चिन्ह के रूप में धारण करती है। वह इस अभाव को अनछुआ नहीं कर सकती है, क्योंकि इस अभाव का न होना स्वयं उसका (कविता का) न होना होगा। इसलिए प्रेम (श्रृंगार)और कविता (करुणा) के संयोग के अर्थ में प्रेम कविता एक असंभव कल्पना है। वह वस्तुतः इस अभाव को अनछुआ करने की कविता की प्रबल आकांक्षा के क्षणों में उसकी आस्तित्विक विवशता की छटपटाहट है। वह उस गर्भ में वापस लौटने की प्रबल अवेचन आकांक्षा की विफलता से उत्पन्न छटपटाहट है, जिसके गर्भ से उसका जन्म हुआ है। लेकिन छटपटाहट के इन्हीं क्षणों में वह प्रेम की दुर्लभ छवियों की रचना करती है। अपनी मृत्यु से दुचार होने के इन क्षणों में वह अपनी देह-भाषा के सबसे करीब होती है।''[2]

जय प्रकाश महर्षि नवेन्दु मुख्यतः मानवता प्रेमी कवि है, 'ओ प्रिया तुम', काव्य संग्रह में मुझे गीतों का मिला है वरदान प्रिये।' शीर्षक कविता में अपनी स्पष्ट बातों को बेवाक लिखते हैं-

''मेरे पास जग की
कोई माया नहीं
मेरे सिर पर किसी
हस्ती का साया नहीं
मेरे बातों पे दे दे कोई कान प्रिये।
मेरे गीत ही है मेरी पहचान प्रिये।''[3]

जयप्रकाश नवेन्दु महर्षि अपने अनुभवों के साथ अपनी रचना, अपनी गीत, काव्यों को अपनी पहचान बना कर अपने कार्य पथ पर आगे बढ़ते हैं।

''हजारों साल नर्गिस अपनी
बेनूरी पे रोती है।
बड़ी मुश्किल से होता है
चमन में दीदावर पैदा।।''[4]

अर्थात् यह कहने का अभिप्राय यह है कि सौन्दर्य के प्रति पारखी दृष्टि रखने वाला कोई दुनिया में हजारों-हजार साल बाद जाकर कहीं पैदा होता है। जबकि संसार में सौन्दर्य, प्रेम, सच्चाई या फिर अच्छाई तो हमेशा ही मौजूद रहती है। लेकिन इस सबकी कद्र करने वाला और इन्हें प्रेम करने वाला और अपने मन प्राणों को भरने वाला यहाँ तक कि खुद को इन पर न्यौछावर करने वाला कोई विरला ही कभी कभी हुआ करता है। जो कि समूची मानवता को प्रेम करता है। सारी कायनात को करूणा की दृष्टि से देखता है। तो मैंने भी इन कविताओं में सारी मानवता से प्रेम किया है। सारी कायनात से प्रेम किया है।

छायावाद काव्य के आधार स्तंभों में से एक प्रमुख स्तंभ जयशंकर प्रसाद जी हैं। विभिन्न विद्वानों के मतानुसार प्रसाद ने अपनी काव्य कृतियों से छायावाद की नींव रखी, जिसके द्वारा खड़ी बोली के काव्य में न केवल कमनीय माधुर्य की रससिद्ध धारा प्रवाहित हुई बल्कि जीवन के सूक्ष्म एवं व्यापक आयामों के चित्रण की शक्ति भी संचित हुई और कामायनी तक पहुँचकर वह काव्य प्रेरक शक्तिकाव्य

के रूप में प्रतिष्ठित हो गया। इनकी प्रेम-दृष्टि अत्यंत व्यापक है। वे प्रेम के मर्म का अविज्ञान करने वाले कवि हैं। व्यष्टिगत और समष्टिगत प्रेम को प्रसाद ने सार्थक काव्यात्मक अभिव्यक्ति दी है-

''शून्य हृदय में प्रेम-जलद-माला कब फिर घिर आवेगी?
वर्षा इन आंखों से होगी कब हरियाली छावेगी?
रिक्त हो रही मधु से सौरभ सूख रहा है आतप हैं
सुमन कली खिलकर कब अपनी पंखुड़ियाँ बिखरावेगी?
लम्बी विश्व कथा में सुख की निद्रा सी इन आंखों में-
सरस मधुर छवि शान्त तुम्हारी कब आकर बस जावेगी?
मन-मयूर कब नाच उठेगा कादंबिनी छटा लखकर;
शीतल आलिंगन करने को सुरभि लहरियाँ आवेगी?
बढ़ उमंग-सरिता आवेगी आर्द्र किये रूखी सिकता;
सकल कामना स्रोत लीन हो पूर्ण विरति कब पावेगी?''[5]

इस प्रकार पूर्व के कवियों ने भी अपनी रचनाओं में प्रेम को ही जिया है, प्रेम को प्रसाद ने भी अपने-अंदाज से उकेरने का प्रयास किया है। जयशंकर प्रसाद के सम्मुख उन्हीं के काल के कवि छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से सबसे मजबूत स्तंभ कहे जाने वाले सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की प्रेम दृष्टि अत्यंत व्यापक है, इन्होंने अपने जीवन में कई अपनों को खोया है, उनके प्रेम विरह को अपने जीवन में अनुभव किया है, निराला की शुरूआती दिनों की कविताओं में 'जूही की कली' एक प्रेम कविता ही है। इस काव्य में निराला ने प्रकृति के माध्यम से नायक-नायिका के प्रेम को सार्थक 'काव्यात्मक' भंगिमा दी है-

''निर्दय उस नायक ने
निपर निठुराई की
कि झोंकों की झड़ियों से
सुन्दर सुकुमार देह सारी झकझोर डाली,
मसल दिये गोरे कपौल गोल;
चौंक पड़ी युवती—
चकित चितवन निज चारों ओर फेर,
हेर प्यारे सेज-पास,
नम्रमुख हँसी-खिली,
खेल रंग, प्यारे संग।''[6]

निराला ने अपने इस काव्य में प्रकृति को आधार बनाकर प्रेम काव्य जूही की कली का सृजन किया है।

प्रेम काव्य की रचना करते हुए छायावादी कवयित्री जिन्हें आधुनिक मीरा भी कहा गया लिखी हैं-

''कितनी करुणा कितने सन्देश,
पथ में बिछ जाते बन पराग,
गाता प्राणों का तार-तार
अनुराग-भरा उन्माद-राग;
आंसू लेते वे पद पखार!
हँस उठते पल में आर्द्र नयन
घुल जाता ओठों से विषाद,
छा जाता जीवन में वसंत
लुट जाता चिर-संचित विराग;
आखें देतीं सर्वस्व वार।''[7]

हिन्दी की समस्त कवयित्रियों में प्रमुख स्थान रखने वाले कवयित्री महादेवी वर्मा का काव्य 'वेदना' का काव्य है, और वेदना में शुद्ध प्रेम का संचय होता है। महादेवी जो वैवाहिक जीवन के कुछ वर्षों के अंदर ही विधवा का रूप धारण की थी। उस माहामाया के समस्त कविता में वेदना ही वेदना और उसके प्रति प्रेम विराजमान है। महादेवी ने निरंतर प्रियतम की प्रतीक्षा की है। इंतजार में प्रेम और मीठा होता जाता है।

हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका सुभद्र कुमारी चौहान की काव्य रचना में उपस्थित प्रेम तत्व-

''तुम मुझसे पूछते हो 'जाऊँ'?
मैं क्या जवाब दूँ, तुम्हीं कहो!
'जा....' कहते रूकती है ज़बान
किस मुँह से तुमसे कहूँ 'रहो'!!
सेवा करना था जहाँ मुझे
कुछ भक्ति-भाव दरसाना था।
उन कृपा-कटाक्षों का बदला
बलि होकर जहाँ चुकाना था।।
मैं सदा रूठती ही आई,
प्रिय! तुम्हें न मैंने पहचाना।
वह मान बाण-सा चुभता है,
अब देख तुम्हारा यह जाना।।''[8]

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना का स्वर अत्यंत तेज है, किन्तु उपरोक्त काव्य में व्यक्तिगत प्रेम का स्वर हमें स्पष्ट दिखाई देता है।

''जब हथेलियों में आई अन्तर रीत गया
रोका बहुत, मनाया कितना अपर्ण बीत गया
मलय गन्ध में दिशा घुमती पुतली में मृदु कारा
पत्र-पत्र हिल रहा, मिल रहा यह, सन्देश तुम्हारा।''[9]

उपरोक्त कविता 'भारतीय आत्मा' के नाम से विख्यात कवि माखन लाल चतुर्वेदी की व्यष्टि मूलक काव्य का साक्ष्य देती है। माखन लाल चतुर्वेदी राष्ट्र प्रेम के कवि हैं।

बालकृष्ण शर्मा नवीन परम्परा और समकालीन कवि हैं। उनकी कविता में भी व्यष्टि और समष्टि प्रेम के स्वर सुनाई देते है। जैसे-

''भार-पारावार में अभिसारिका सी लीन
बाबरी मनुहार-नौकर डुल रही प्राचीन,
क्षीण बन्धन हीन जर्जर गलितदास समूह,
पार कैसे जाए? है यह प्रश्न गूढ़ दुरूह!
स्वर-तरंगे बढ़ रही है बढ़ रहा अनुराग,
जग गया हाँ, जग गया है सुप्त अमुत राग।''[10]

3. निष्कर्ष

नवीन की कविताओं में प्रेम काव्य के साथ राष्ट्रीय आन्दोलन की चेतना, गाँधी दर्शन और संवेदनाओं की संस्कृतियाँ समान ऊर्जा सुनी जा सकती है। आधुनिक हिन्दी कविता के विकास में उनका स्थान अविस्मिरणीय है।

संदर्भ ग्रंथ

1. 'प्रेम रंग-रस ओढ़ चदरिया', ओशो संस्करण 2012, प्रकाशक डायमंड पॉकेट बुक्स, प्रा.लि., ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-2, पृ. 319
2. प्रेम के रूपक: आधुनिक हिन्दी की कविताएँ, संपादक मदनसोनी, पृ. 12,13
3. 'ओ प्रिया तुम'। जय प्रकाश नवेन्द्र महर्षि, प्रखर प्रकाशन नवीन शाहदरा दिल्ली, पृ. 94
4. ओ प्रिया तुम'। जय प्रकाश नवेन्द्र महर्षि, प्रखर प्रकाशन नवीन शाहदरा दिल्ली, पृ. 05
5. 'प्रसाद का सम्पूर्ण काव्य' सम्पादन एवं भूमिका डॉ. सत्यप्रकाश मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी, बिल्डिंग, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद, चतुर्थ संस्करण, 2013 (कवर), पृ. 254
6. प्रेम के रूपक: आधुनिक हिन्दी की कविताएँ, संपादक मदनसोनी, पृ. 134
7. प्रेम के रूपक: आधुनिक हिन्दी की कविताएँ, संपादक मदनसोनी, पृ. 46
8. प्रेम के रूपक: आधुनिक हिन्दी की कविताएँ, संपादक मदनसोनी, पृ. 81
9. प्रेम के रूपक: आधुनिक हिन्दी की कविताएँ, संपादक मदनसोनी, पृ. 68
10. प्रेम के रूपक: आधुनिक हिन्दी की कविताएँ, संपादक मदनसोनी, पृ. 148